मुख्य परीक्षा

प्रश्न- "चीन जिस प्रकार एशिया में संपर्क मार्गों इत्यादि के माध्यम से अपनी सामरिक शक्ति का विस्तार कर रहा है, वो भारत के लिये भी चुनौती का विषय है।" भारत को इस सन्दर्भ में किस प्रकार की वैकल्पिक रणनीतियों को अपनाना चाहिए? सुझाव सहित उत्तर दीजिए।

(250 शब्द)

"China is expanding its tactical power through the contact routes etc. in Asia, which is a matter of challenge for India". Which type of alternative policies should India adopt? Answer with suggestion.

(250 Words)

मॉडल उत्तर

स्वतंत्रता के पश्चात् ही कुछ समय बाद भारत एवं चीन के मध्य सीमा विवाद को लेकर तनाव विद्यमान हो गया, जिसकी परिणति 1962 के भारत-चीन युद्ध में हुई। इसमें भारत को एक बड़ा भू-भाग चीन के हाथों गंवाना पड़ा, लेकिन उसके बाद भी सीमा विवाद को नहीं सुलझाया जा सका। 1979 में चीन द्वारा आर्थिक उदारीकरण की नीति अपनाने के पश्चात् उसका तेजी से आर्थिक उत्थान हुआ तथा 1991 के पश्चात् भारत ने भी आर्थिक प्रगति दर्ज की। वर्तमान में भी भारत तथा चीन के मध्य पारस्परिक अंर्तद्वन्द्व विद्यमान है।

चीन ने आर्थिक आक्रामकता के द्वारा तीव्र आर्थिक विकास किया है तथा विश्व का एक बड़ा निर्यातकर्त्ता देश है। उसने भारत के विरूद्ध 'घेरे की नीति' का प्रतिपादन किया है, जिसके द्वारा वह हिन्द महासागर में भारत के पड़ोसी देशों के साथ आर्थिक एवं रणनीतिक संबंध स्थापित कर भारत के समक्ष सामरिक चुनौती पेश कर रहा है। बांग्लादेश में चटगांव बंदरगाह, श्रीलंका में हंबनटोटा तथा पाकिस्तान में ग्वादर बंदरगाह के विकास द्वारा चीन ने हिन्द महासागर में अपनी उपस्थिति दर्ज करायी है। उसने प्राचीन सिल्क रूट को पुन: जीवित करने की घोषणा की है जो कि हिन्द महासागर में भारत के समक्ष रणनीतिक एवं सामरिक चुनौती है क्योंकि इसके माध्यम से पड़ोसी देशों के चीन के प्रभुत्व में आने की संभावना है।

चीन ने स्थलीय संपर्क योजना 'वन बेल्ट वन रोड' के माध्यम से पश्चिम एशिया से जुड़ने की नीति अपनायी है। चीन-पाकिस्तान कॉरीडोर इसका प्रमुख भाग है। यह कॉरिडोर पाक अधिकृत कश्मीर से गुजरता है, जो कि भारत एवं पाकिस्तान के मध्य तनाव का क्षेत्र है। चीन की इस क्षेत्र में उपस्थिति तथा पाकिस्तान को अवसंरचनात्मक सहयोग के द्वारा वहां अपनी सशक्तता सुनिश्चित करना भारत के लिए चुनौतीपूर्ण परिस्थिति पैदा कर रहा है। दरअसल, वन बेल्ट वन रोड प्राचीन स्थलीय सिल्क रूट को पुनर्जीवित करने का प्रयास है, जो आर्थिक के साथ-साथ भारत के प्रति रणनीतिक एवं सामरिक हितों से प्रेरित है।

भारत ने ओबोर के भाग चीन–पाकिस्तान कॉरिडोर का विरोध किया है तथा इससे जुड़ने से इन्कार कर दिया। लेकिन भारत को इससे उत्पन्न होने वाली भविष्यगत चुनौतियों से निपटने की रणनीति बनानी होगी।

- भारत को स्वयं अपनी आंतरिक कनेक्टिविटी को बढ़ाना चाहिए, साथ ही सागरीय संचार व्यवस्था को सुदृढ़ करते हुए पड़ोसी देशों से सशक्त संबंधों की स्थापना पर बल देना होगा।
- भारत ने चीन की मेरीटाइम तथा स्थलीय सिल्क रूट की रणनीति से निपटने के लिए कुछ महत्त्वपूर्ण प्रयास किए हैं। जैसे–मौसम परियोजना के द्वारा हिन्द महासागरीय देशों के साथ सांस्कृतिक तथा आर्थिक संबंधों की सुदृढ़ता पर बल दिया जा रहा है। एक्ट ईस्ट पॉलिसी के द्वारा पूर्वी एशियाई देशों के साथ संबंधों की प्रगाढ़ता में वृद्धि की जा रही है।
- भारत ने जापान के साथ मिलकर एशिया–अफ्रीका कॉरिडोर को प्रारंभ करने का निर्णय लिया है ताकि लोगों के साथ लोगों की भागीदारी तथा जुड़ाव को बढ़ाया जा सके ।

हाल ही में भारत, जापान, ऑस्ट्रेलिया तथा संयुक्त राज्य अमेरिका ने क्वाड की स्थापना की दिशा में प्रयास किए हैं, ताकि एशिया–प्रशांत क्षेत्र में समुद्री नौवहन को सुरक्षित एवं अबाध बनाया जा सके।

इस प्रकार निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि चीन के संपर्क मार्गों द्वारा सामरिक महत्व अर्जित करने की नीति को प्रतिसंतुलित करने के लिए भारत को एक साथ उपर्युक्त मोर्चों पर कारगर पहलें करनी होंगी।